The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिबाफुले व सावित्री फुले का योगदान

डॉ० दुर्गेश धर दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री पी०एल० मेमोरियल
पी०जी०कालेज बाराबंकी (यू०पी०)

कु० श्रद्धा सिंह
एम०एड० छात्रा
श्री पी०एल० मेमोरियल पी०जी०कालेज
बाराबंकी (यू०पी०)

सारांश –

ऐतिहासिक धर्म ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से स्त्री को मात्र वस्तु समझा गया स्त्री को शिक्षा पाने का कोई अधिकार नही था, क्योंकि भारतीय समाज में स्त्री को अनेक बन्धनों में बांध कर रखा था जातिगत विवाह, बाल विवाह, सती प्रथा, बहु पत्नी विवाह, अशिक्षा इस सब से निकल कर भारतीय स्त्री को अपनी अलग पहचान बनाना आवश्यक हो गया।

भारतीय नारी शिक्षा में ज्योंतिराव फुले व सावित्री बाई फुले का योगदान बहुत महत्वपुर्ण है महात्मा बुद्ध के बाद फुले दम्पत्ति ने देश में महिलाओं के प्रति फैले आडम्बर, जटिल कुरीतियां को सशक्त व सार्थक चुनौती दी।

महात्मा फुले दम्पत्ति द्वारा एक बार पुनः नारी का खोया सामाजिक सम्मान शिक्षा के माध्यम से दिलाने का प्रयास किया जिसका तत्कालीन सामाज में सकारात्मक प्रभाव पड़ा जिस कारण सकारात्मक सोच रखने वाले अधिकांश लोगों ने फुले दम्पत्ति के कदम की सराहना की और इस व्यवस्था में सहयोग दिया। जो तत्कालीन समय में बहुत बड़ा सामाजिक परिवर्तन एवं स्त्री शिक्षा में क्षेत्र में बहुत बड़ा कदम साबित हुआ।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में फुले दम्पत्ति के प्रयासों की प्रासंगिकता को वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः– कन्याशाला, दम्पत्ति, सूत्रधार, अर्धांगिनी, कार्यकत्री, कन्या पाठशालाएं, चहुमुंखी।

प्रस्तावनाः–

19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण एवं सामाजिक क्रान्ति व नारी उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिराव फुले ने शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया। दलित एवं सभी वर्गों की स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहन करना आवश्यक मानते हुए पाठशालाएं, कन्या पाठशालाएं एवं भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला, महिला छात्रावास आदि खुलवाएं। मैकाले की शिक्षा नीति (फिल्टर नीति) का विरूद्ध किया और 1882 मे हण्टर कमीशन के समक्ष प्राइमरी शिक्षा को निःशुल्क करने हेतु प्रस्तुत प्रतिवेदन ज्योतिराव फुले जी द्वारा किया गया जो अविस्मरणीय प्रयास रहा। शैक्षिक क्षेत्र में ज्योतिराव फुले का योगदान व शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गए कार्यो की प्रासंगिकता तथा नारी उद्धारक के रूप में उनके कार्यों को अध्ययन किया गया है तथा नारी शिक्षा में सावित्री बाई फुले का योगदान महिलाओं के लिए एक आदर्श स्थापित करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्देश्यः– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिराव फुले व सावित्री बाई फुले को योगदान सम्बन्धित पहलुओं का ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन करना, विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालना और भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

शोध परिकल्पनाः– प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी की परिकल्पना है कि फुले दम्पत्ति द्वारा किये गए शैक्षिक कार्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रख कर उनकी प्रासंगिकता दर्शाना जिससे वर्तमान पीढ़ी उनके कार्यों को अपना सके एवं नारी को सम्मान दे सके।

शोध प्रविधिः– प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया तथा द्वितीयक स्त्रोतो में लेखकों की पुस्तकों, शोधपत्रों, पत्रिकाओं एव इन्टरनेट द्वारा अध्ययन किया गया है।

स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोणः– ज्योतिराव फुले विश्व के पहले महापुरूष थे। जिन्होने स्त्री को पुरूष से भी श्रेष्ठ माना है। उनकी दृष्टि में स्त्री को वे सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो पुरूष को प्राप्त है। यदि पुरूष बहुपत्नी विवाह का अधिकारी है तो स्त्री को भी बहुविवाह की अधिकारिणी होनी चाहिए अन्यथा पुरूषों के ये अधिकार निषिद्ध कर देना चाहिए। 19वीं शताब्दी के सुधार आन्दोलनों व सुधारवादियों को स्त्री की स्थिति को लेकर काफी गहरी चिन्ता थी। स्त्री की सामाजिक स्थिति ठीक न थी स्त्रियों की भूमिका केवल ग्रह कार्य तक ही सीमित थी प्राचीन काल से वर्तमान तक स्त्रियों की यही भूमिका मान्य रही। वे चाहे खेतो में कार्य करे या सफेदपोश नौकरियों में आज भी उसकी यही कार्यकारी भूमिका गौण है। शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों को जो अधिकार दिलाये वह स्मरणीय है। ज्योतिराव फुले के क्रान्तिकारी विचारों ने भारतीय सामाजिक इतिहास से स्त्रियों को जो शक्ति और गरिमा प्रदान की है 21वीं शताब्दी की और जाते समय देश को उनके विचारों की यह विरासत नये काल की प्रेरणाओं की परिचय देगी। आज जिसे हम शिक्षा कहते हैं वह ज्योतिराव के जन्म से पूर्व अस्तित्व नही थी न ही समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का अधिकार ही प्राप्त था।

शिक्षा नीति को सही दिशा देने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षतः ज्योतिराव फुले का अमूल्य योगदान है जो निम्नवत् है–

विद्यालय एवं स्थानीय भाषा का विकासः– अगस्त 1848 ई. में ज्योतिराव द्वारा स्थापित किये गए बालिका विद्यालय से सारे समाज के साथ–साथ अग्रेंज सरकार की भी आंखें खुल गईं। पूरे महाराष्ट्र में विद्यालय का विकास कराया गया उनके द्वारा संचालित 18 विद्यालय का जिक्र बंबई प्रेसीडेंसी के शिक्षा अभिलेखों से मिलता है। स्थानीय भाषा में शिक्षा की व्यवस्था पाठयक्रम भी मराठी था।

प्रौढ़ शिक्षाः– ज्योतिराव ने 1855 ई. में प्रौढ़ शिक्षा को आरम्भ किया उन्होंने खेतों में अन्य जगहों में काम करने वाले मजदूरों और ग्रहणियों के लिए रात्रि पाठशालाएं खोली एंव उस समय शिक्षा घर–घर पहुंचाने की पहल चल रही थी।

छात्रावास की व्यवस्थाः– ज्योतिराव ने अनेक स्कूल खोले जब बच्चे दूर–दराज से पढ़ने आने लगे तो उन्होंने अपने घर के समीप ही एक छात्रावास की व्यवस्था की। गरीब छात्रों के लिए निःशुल्क व्यवस्था की।

हण्टर कमीशन को सुझावः– ज्योतिराव द्वारा अनेक स्तरों पर सुझाव दिए गए जो निम्नवत् है–

1. प्राथमिक शिक्षा पर जोर, नगरपालिकाओं के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों की व्यवस्था हो।

2. बंबई विश्वविद्यालय से छात्रों को स्वाध्यायी रह कर प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति दी गइ।

3. आरक्षण व छात्रवृत्ति प्रस्ताव के प्रथम के प्रस्तावक महात्मा ज्योतिराव ने सर्वप्रथम 1882 ई. में अत्यन्त पिछड़े वर्गों के लिए नौकरियों में अनुपातिक आरक्षण व सब के लिए मुक्त शिक्षा की मांग उठाई।

4. अभियांत्रिकी विद्यालयों हेतु ज्योतिराव ने तकनीक शिक्षा का सुझाव दिया।

स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिराव फुले का कार्यः– भारतीय स्त्रियों के समस्त मानवाधिकार छीन लेने से उसकी जो दयनीय स्थिति हो गयी थी उससे उबरने एवं समानता व शिक्षा दिलाने के प्रयासों को कड़ी में अत्यन्त महत्वपूर्ण नाम सामाजिक क्रांति शैक्षणिक क्रांति के प्रणेता ज्योतिराव फुले का आता है। नारी शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिकन मिशन द्वारा संचालित कन्याशाला जिसे मिस फर्राट नामक विदेशी महिला मिशनरी चला रही थी ज्योतिराव उससे बहुत प्रभावित हुए और पूना में लड़कियों के लिए ऐसी ही पाठशाला खोलने का निर्णय लिया। प्रथम पाठशाला की स्थापना बुधवार पेठ के मकान में 1 जनवरी 1848 ई0 को की गई तथा 15 मई की कन्या पाठशाला की स्थापना की।

नारी शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना ज्योतिराव व उनके मित्र सदाशिवराव गोवंदे ने स्त्री शिक्षा के लिए सर्वप्रथम प्रयास अपने ही घर से प्रारम्भ करने का निर्णय लिया ज्योतिराव ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षित करना प्रारम्भ किया और स्वंय कन्याओं को शिक्षा हेतु एक पाठशाला पूना में खोली। उस समय छात्रों की संख्या 6 थी।

अपनी कन्या पाठशाला मे पढ़ाने के लिये अन्य शिक्षको की आवश्यकता पड़ी। स्त्रियों के उत्थान के लिए अनेक कष्ट उठाते हुए ज्योतिराव और सावित्रीबाई, शिक्षा के कार्य मे जुटे हुए थे कन्या पाठशालाओं का प्रारम्भ केवल 8 छात्राओं से हुआ था। किन्तु शीघ्र की यह संख्या बढ़कर 48 तक पहुच गयी। ज्योतिराव फुले ने 18 विद्यालय खोल दिये थे। उन्होने एक पाठशाला प्रबंधन समिति भी बना ली थी। इस प्रबन्ध समिति ने 7 सितम्बर 1851 ई0 में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात 15 मार्च 1852 ई0 एक ओर कन्या पाठशाला की स्थापना बेताल पेठ मे की।

स्त्री शिक्षा को समर्पित सावित्री बाई फुलेः– सावित्रीबाई न केवल ज्योतिराव फुले की अर्धगिनी थी, वरन् उनके क्रांतिकारी आन्दोलनों की भी अर्धगिनी बन गयी थी। ज्योतिराव फुले के समान ही सावित्रीबाई फुले भी धैर्य समर्पण एवं दूरदृष्टि जैसे आलौकिक गुणों की स्वामिनी थी। सावित्रीबाई का जन्म सतारा जिले के खडांला तहसील के नयागांव में 3 जनवरी 1831 ई0 में खंडोजी नेवसे पाटिल के घर हुआ।

भारत कि प्रथम अध्यापिका का गौरव हासिल कर लिया। उन्होने नारी शिक्षा आन्दोलन हेतु स्वंय को समर्पित कर दिया। वे भी नारी शिक्षा हेतु अपनी निःशुल्क सेवाएँ देती और अपनी आजीविका हेतु खाली समय मे मोटे गद्दे बनाकर बेचने का कार्य करती थी। कन्या पाठशालाओं की सफलता देखते हुए ज्योतिराव ने अनेक शहारो में विद्यालय खोले जिसका उल्लेख पहले किया गया है। जिसका कार्य भार सावित्रीबाई मात्र स्त्री शिक्षा आन्दोलन तक ही सीमित न रही। उनका लक्ष्य स्त्रियों का चंहुमुखी विकास

करना था। ज्योतिराव के निधन के बाद उनके द्वारा स्थापित सत्य शोधक समाज की बागडोर वर्ष 1891 ई0 से 1897 ई0 तक सावित्रीबाई ने संभाली। वे एक बुद्विमान लेखिका, तथा प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री भी थी। उनके कृत कविता संगृह काव्य फुले 1854 में प्रकाशित हुये थी।

सावित्रीबाई को इस तरह तत्कालीन वातावरण के विरूद्व कार्य करते देख उनके भाई व पीहर के अनेक लोगों ने भी मना किया था किन्तु उन्होने किसी की बात न सुनी व निरन्तर अपने पति के साथ कार्य करती रही। 1897 ई0 में महाराष्ट्र में प्लेग फैला जिससे एक बालक की दशा बहुत खराब थी। सब लोग दूर से ही देख रहे थे। सावित्रीबाई ने उसे गले लगाया और कंधे मे उठाकर अपने पुत्र यशवंत राव के अस्पताल मे ले गयी। इस बालक से उन्हे भी हैजा हो गया और महान क्रांतिकारी का निधन 1897 ई0 मे हो गया।

निष्कर्षः–

नारी प्रेरणा की स्त्रोत सावित्रीबाई भारत की प्रथम अध्यापिका, समाजसेवी, क्रांतिकारी महिला तो है ही साथ ही भारत मे स्त्री मुक्ति आन्दोलन की प्रणेता भी है। उन्होने जिस स्त्री मुक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया था उसकी बदौलत ही आज अनेक महिलाये उच्च पद पर पहुँच सकी है। इस प्रकार सावित्रीबाई का नारी उत्थान मे जो अभूतपूर्व योगदान था, वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारत मे हर शिक्षित नारी उनकी ऋणी है। अतः प्रत्येक शिक्षित नारी का यह कर्तव्य है कि वह उस महान नारी सावित्रीबाई फुले से देश की सभी नारियों को अवगत कराएं। शिक्षा के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने का हकदार है। वस्तुतः प्रत्येक सही मायनों में सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम क्रांतिकारी कार्यकत्री है। नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व व अद्वितीय है। भारत की ऐसी महान नारियाँ को वर्तमान सरकारों ने अवगत कराने का कोई प्रयास नही किया और न ही देश मे चल

रहे महिला संगठनों ने ऐसे प्रयास किये, परन्तु महाराष्ट्र राज्य व महिला संगठन इसके अपवाद है।

सावित्रीबाई पूरे देश का गौरव है। और देश की हर जागरूक जनता का यह कर्तव्य बनता है। कि वे भारतीय नारी शिक्षा की प्रथत हिमायती नारी से अपने देश की नारियों को परिचित कराएं। आज फुले दम्पति के कार्य उपलब्धि व प्रेरणा से भारत के अन्य राज्यों की सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है। परन्तु फुले दम्पति के गुणों व कार्यो का उचित परिमार्जन नही हुआ एवं वह सम्मान पूरे भारतवर्ष में अब तक प्राप्त नही हुआ है। राष्ट्र के प्रति महत्पूर्ण महापुरूषों के साथ ही विश्व के महानतम लोगों की श्रेणी मे भी उनका नामा स्वतः आ जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

- आचार्य डॉ0 हेमलता, "भारत मे सामाजिक क्रांति के पथ– प्रदर्शक ज्योतिबा फुले" सम्पक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 61
- सिंह, वी.एन.सिंह, जनमेजय, "भारत मे सामाजिक आन्दोलन" रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, दिल्ली, बंगलुरू, गुवाहाटी, कोलकाता संस्करण, 2016 पृष्ठ 221।
- चचंरीक, कन्हैयालाल, "आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन" युनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृष्ठ 30।
- दृष्टि। करेंट अफेयर्स टूडे। जनवरी 2016 पृष्ठ 275।
- मेघवाल, डॉ0 कुसुम, "भारतीय नारी के उद्वारकः बाबा साहेब डॉ बी0 आर0 अम्बेडकर" सम्यक प्रकाशन दिल्ली तृतीय संस्करण 2010 पृष्ठ 70,71,72 ।
- आचार्य डॉ0 हेतलता, "भारत मे सामाजिक क्रांति के पथ– प्रदर्शक ज्योतिबाफुले" सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015 पृष्ठ 91ण

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/08

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० दुर्गेश धर दुबे एवं कु० श्रद्धा सिंह

?***for publication of research paper title***

स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिबाफुले व सावित्री फुले का योगदान

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com